

सहन करने की क्षमता विकसित करें मनुष्य: आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में चातुर्मास, श्रावक समाज को दी प्रत्येक माह खमत खामना करने की सीख, महावीर इंटरनेशनल राजसमंद संभागीय अधिवेशन कल, महिला अधिवेशन का दूसरा दिन, उदयपुर की नीलिमा खेतान को आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार से नवाजा

केलवा: 23 सितम्बर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने मनुष्य को स्वयं में सहन करने की क्षमता को विकसित करने की आवश्यकता है। संबोधि के पांचवें अध्याय में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि जो व्यक्ति अप्रिय वाणी, कर्म और आचरण को सहन करने वाला होता है वह अहिंसक की श्रेणी में आता है। प्रिय—अप्रिय व्यवहार होने की स्थिति में भी सामने वाले के प्रति समता का भाव रखा जाता है तो यह भी एक बड़ी साधना के समान है।

आचार्यश्री ने उक्त उद्गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास में शुक्रवार को दैनिक प्रवचन के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को जीवन में इस सूत्र को अपनाने की महत्ती आवश्यकता है कि जिस तरह के व्यवहार अथवा कर्म की वह दूसरों की अपेक्षा नहीं करता। उस तरह के आचरण और कर्म को स्वयं भी नहीं करें। कोई अभद्र भाषा का उच्चारण कर रहा है अथवा तिरस्कार की दृष्टि से आचरण कर रहा है तो उसी के अनुरूप व्यवहार करने की बजाय विनयशील बनकर वार्ता करने का प्रयास करें। मनुष्य धर्म का सार सुनें और उसे धारण करने का प्रयास करें। भगवान महावीर स्वामी ने भी सहन करने की प्रवृत्ति को जीवन में स्थान देने की बात कही थी। उन्होंने वाणी को परिभाषित करते कहा कि इसके दो गुण और दो दोष हैं। दो दोष में पहला है किसी बात को अनावश्यक तरीके से लंबा खींचना। एक ही बात को बार—बार कहना गलत है। दूसरा दोष है हम किसी बात को कहते हैं, लेकिन उसका कोई सार नहीं होता। हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम कम शब्दों में सार पूर्ण बात को दूसरों के सामने प्रकट करने का प्रयास करें। थोड़ा बोलना और स्पष्ट बोलना वाकपुट को दर्शाता है। किसी वक्ता की सफलता भी इसी में निहित है कि वह श्रोताओं के मन में अपनी अमिट छाप छोड़ने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति आगम की साधना करता है उसे देवलोक में भी स्थान मिलता है। गुरु द्वारा यदा कदा कही जाने वाली कठोर बातों, उलाहना, परिषद् के बीच डांटने की प्रवृत्ति को

अन्यथा लेने की बजाय यदि हम उसे विनयपूर्वक ग्रहण करने का प्रयास करेंगे तो हमारा जीवन सार्थक हो सकता है। गुरु को इस बात का अधिकार होता है कि वह अपने शिष्य और समाज के किसी व्यक्ति को गल्ती करने पर उलाहना दे सकता है। जो शिष्य अपने गुरु की डांट को सह लेते हैं। गुस्से और आवेश में नहीं आता। वह महानता की ओर अग्रसर होता है। संघ में ऊंचे ओहदे पर आसीन होने का मौका मिलता है।

### प्रतिमाह हो खमत खामना

उन्होंने कहा कि आज परिवारों में परस्पर झगडा और कटुता रखने की बातें प्रायः देखने और सुनने को मिलती हैं। इसे कम करने के लिए सहन करने का प्रयास किया जाना चाहिए। एक लक्ष्य निर्धारित हो। साथ ही आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक माह परिवार के सदस्यों के बीच खमत खामना की प्रवृत्ति बने। इससे माहभर के दौरान प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हुई त्रुटियों को मिटाया जा सके। यह जैन शासन की अच्छी परंपरा है। इससे सौहार्द बना रहता है और परस्पर दूरियां कम होती हैं। मनुष्य प्रतिदिन सोने और उठने से पहले इस बात का चिंतन करे कि उसने आज पवित्र कार्य क्या किया है। जीवन की सफलता इसी में निहित है कि हम संयम और त्याग में रहे। 12 व्रतों को जीवन में ढालने से आत्मा निर्मल बनती है। कषाय को शांत और अच्छा कार्य करने की प्रवृत्ति को विकसित करने की आवश्यकता है।

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि आचार्यप्रवर की छत्र छाया में असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। आवश्यकता इस बात की है कि हम धर्म और संयम को जीने का आधार बनाए। इसी भावना के साथ आगे बढ़ने का मार्ग तय करने का प्रयास करें। इस अवसर पर चैन्नई तेरापंथ महिला मंडल की ओर से 12 व्रतों के 400 फार्म आचार्यश्री के सम्मुख पेश किए। हैदराबाद की सदस्याओं ने गीत का संगान किया। पटना से आए तनसुखलाल बैद ने बिहार श्रावक समाज की ओर से अपनी भावनाएं प्रकट की। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

उदयपुर की नीलिमा को आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार

### महिला अधिवेशन का दूसरा दिन

तेरापंथ समवसरण में दोपहर करीब दो बजे अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ओर से आयोजित अलंकरण सत्र में आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार उदयपुर की श्रीमती नीलिमा खेतान को प्रदान किया गया। खेतान को पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपए का चैक, प्रशस्ति पत्र और शीलड प्रदान की गई। श्राविका गौरव का पुरस्कार

मुंबई की श्रीमती सुशीला कच्छारा, श्रीमती प्रेमलता सेठिया और प्रतिभा पुरस्कार गायिका श्रीमती मीनाक्षी भूतोडिया को प्रदान किया गया। उन्हें यह पुरस्कार मोहनीदेवी, सायर बैंगानी, अध्यक्ष कनक बरमेचा, सूरज बरडिया, सुशीला पटावरी, पूर्व अध्यक्ष सौभाग बैद, तारा सुराणा, प्रकाश तातेड और मधु जैन ने प्रदान किए। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने महिलाओं से अपने कार्य और धर्म के प्रति सचेत रहकर कार्य करने की प्रेरणा दी। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने महिलाओं को समाज के विकास की धुरी बताते हुए कहा कि यह समाज के साथ परिवार का विकास भी करती है। यह दोहरी जिम्मेदारी को वहन कर आगे बढ़ रही है। प्रारंभ में दिल्ली महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। संयोजन पुष्पा बैद ने किया।



